P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कोटा शहर में सिक्ख समुदाय का प्रादुर्भाव एवं निरूपण

सुदीप कौर
शोधार्थी,
समाज शास्त्र विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया
विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

भारत देश विविधतापूर्ण संस्कृति से ऊपजा हुआ देश है जिसमें प्रत्येक विशिष्ट समुदाय अपने धर्म से संबंधित ऊपजी अपनी संस्कृति को और अपने अस्तित्व को बनाए रखना चाहता है। प्रत्येक विशिष्ट समुदाय के लिए उसका धर्म, उसकी संस्कृति का सार है। सिक्ख धर्म भी, इन्हीं धर्मों में से एक है। विश्व के सभी धर्मों में से सिक्ख धर्म सबसे नवीनतम धर्म है जिसकी उत्पति 500 वर्ष पूर्व श्री गुरु नानक देव जी के कर कमलों द्वारा हुई। सिक्ख धर्म का अपना एक इतिहास है, इसके विशिष्ट मूल भूत सिद्धांत, उपदेश, लक्षण और स्वयं का दर्शन है। वर्तमान समय, सूचना क्रान्ति एवं परिवर्तनों से युक्त है जिसमें प्रत्येक प्राणी राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय सीमाओं को लांघ रहा है परन्तु फिर भी प्रजाति अपने समूह के विशिष्ट सांस्कृतिक नीतियों को दूसरे समूह से भिन्न रखती है जो कि उन्हें विरासत के रूप में प्राप्त होती है। औद्योगिकीकरण और नगरीकरण के फलस्वरूप सिक्ख समुदाय नित नई चुनौतियों का सामना करते हुए अपने नए स्वरूप को लेकर विश्व में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाये हुये है।

मुख्य शब्द : संस्कृति, दर्शन, प्रजाति, सांस्कृतिक तत्व, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, आमूल परिवर्तन।

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध आलेख प्राथमिक एवं द्वितीयक सूचना स्रोतों एवं अध्ययनों पर आधारित है और अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार से है–

1. सिक्ख धर्म एवं इसकी उत्पत्ति से संबंधित प्रारम्भिक जानकारी प्राप्त करना। सिक्ख धर्म के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का अवलोकन।
2. सिक्ख समुदाय का राजस्थान राज्य में स्थित कोटा नगर में आगमन के कारणों का अवलोकन।
3. बदलते हुये परिदृश्य में सिक्ख समाज चुनौतियों का सामना करते हुये अपने अस्तित्व को बनाये रखने में अडिग है, उन प्रमुख विशेषताओं से संबंधित।

सिक्ख की उत्पत्ति एवं प्रादुर्भाव : सामान्य सन्दर्श

विश्व के सभी धर्मो में से सिख धर्म सबसे नवीनतम धर्म है जिसकी उत्पत्ति 500 वर्ष पूर्व 1469 में श्री गुरू नानक देव जी द्वारा हुई और उन्होंने सिख धर्म के मूलभूत सिद्धातों की प्रस्थापना की। सिक्ख धर्म की उत्पत्ति समाज में तब हुई जब सम्पूर्ण समाज मुगल शासकों द्वारा किये गये धार्मिक अत्याचारों से एवं ब्राह्मण वर्ग द्वारा समाज में प्रसारित अंधविश्वास, छूआछूत से व्यथित था। उस समय श्री गुरू नानक देव जी ने इनका विरोध किया एवं परिस्थितियों के अनुरूप ना केवल धर्म में बल्कि व्यक्ति के आचरण में शुद्धता पर भी बल दिया एवं सम्पूर्ण मानव जाति में आत्म अभिव्यक्ति एवं सम्पूर्णता के बीज प्रस्फुटित किये। (गुप्ता, 1990)

''ईश्वर एक है वह ही सत्य है।''

'सब में प्रकाश है वही प्रकाश प्रभु है'

इसी प्रकाश से सब कुछ प्रकाशित होता है। (सिंह, 1983)

सिक्ख धर्म का मूलभूत सिद्धांत ''ईश्वर से प्रेम करो'' से उपजा हुआ है। सिक्खों के प्रथम गुरू श्री गुरू नानक देव जी ने गृहस्थ जीवन में 18 वर्ष तक रहकर अपने दो शिष्यों बाला व मर्दाना के साथ विश्व भ्रमण (उदासियाँ) करके अपने ज्ञान और अनुभवों को एक नया आयाम दिया और सिक्ख धर्म की स्थापना की। इस प्रकार श्री गुरू नानक देव जी के उपदेश एवं उनका दर्शन सिक्ख धर्म का प्रमुख आधार बना। श्री गुरु नानक देव जी ने आम जनता की भाषा में अपने उपदेश दिये एवं उनका जीवन दर्शन जो जपुजी साहिब में समाहित है, उसने संगतों की सोच एवं दृष्टि को व्यापकता प्रदान की। श्री गुरू नानक देव जी ने ही संगत और पंगत संस्था की स्थपाना करी एवं हिन्दू एवं

मुस्लिम धर्म के मध्य सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित किये। सिक्ख धर्म के प्रमुख लक्षण नाम स्मरण करना, कर्म करना और बांटकर भोजन करना है।

साहित्यवलोकन

पंजाब में सिक्ख आज़ादी का पतन 59.9% से 57.69% हुआ है, जबकि भारत वर्ष में सिक्ख समुदाय की कुल आबादी वृद्धि की ओर गई है। पंजाब में अधिकतर आबादी शहरों के बजाये गाँवों में रह रही है। इसके विपरीत हिन्दू और जैन धर्म के लोग शहरों में अधिक निवास करते है। सन्सेक्स 2011 की पोपुलेशन बाय रीलिज़ियस स्टीज़ में निम्न आँकड़े प्रस्तुत किये गये हैं कि कुल 56,83,894 हिन्दुओं में से 33,78,052 शहरों में निवास करते हैं, जबकि 23,05,842 गाँवों में निवास करते हैं। जबकि 1,23,48,455 सिक्ख गाँवों में निवास कर रहे हैं, इसके विपरीत 36,56,299 सिक्ख आबादी शहरों में निवास कर रही हैं। पिछले 125 वर्षों से पंजाब के बाहर प्रवास बढ़ा है। हरविन्दर सिंह भाटी, डायरेक्टर CCSR के अनुसार सिक्ख आबादी के पतन के कई कारण हैं, जिसमें से पेशा एक प्रमुख कारण है। दूसरे कारणों में सेना में होना या फिर खेती के कारण पंजाब के बाहर जा कर बसना माना जा सकता है।[5]

दत्त (1977) ने सिक्ख समुदाय के प्रवास और उसके बदलते हुये स्वरूप के बारे में अध्ययन किया है। सबसे पहला प्रवास 19वीं शताब्दी के आरम्भ में हुआ जब महाराजा रणजीत सिंह पंजाब के बाहर की रियासतों को युद्ध द्वारा विजयी करने लगे। 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ब्रिटिश साम्राज्य भारत में शासन करने लगा। उस समय सिक्ख अपने धर्म की पालना बिना किसी उत्पीड़न के किया करते थे। ब्रिटिश साम्राज्य सिक्खों को सेना में भर्ती करते थे, जिसके कारण उन्हें देश के विभिन्न प्रान्तों में भेज दिया जाता था। यह भी पंजाब के बाहर प्रवास करने का प्रमुख कारण बना। 1947 में भारत विभाजन पर पाकिस्तान से काफी संख्या में सिक्ख पंजाब के बाहर आकर बस गये। इसी दबाव के चलते कुछ पंजाब के किसान भी भारत के विभिन्न प्रान्तों में बस गये। पंजाब के अन्दर बहुमूल्यता से सिक्ख समुदाय गाँवों में निवास करता है, जबकि पंजाब के बाहर शहरों में निवास करता है।

सिक्ख समुदाय का विस्तार

सिक्ख समुदाय का विस्तार इतिहास में ऐतिहासिक घटनाओं से ओत–प्रोत है। श्री गुरू नानक देव जी जन्म से हिन्दू थे। उनकी विचारधारा, सोचने समझने का नजरिया और उनके धार्मिक सिद्धान्तों ने समाज में उग्र सुधारवादी आयाम दिये। इन्होंने सच एवं सच्चे आचरण को सर्वोपरि बताकर सिक्खों में सत्य, संतोष, विचार, दया, धर्म, दान, विश्वास, धैर्य, संयम, प्रेम, ज्ञान और कर्म जैसे गुणों को अपनाने को कहा। श्री गुरू नानक देव जी के पश्चात् नौ गुरू साहिबानो ने भी उनका अनुसरण किया।

श्री गुरू नानक देव जी के बाद श्री गुरू अंगद देव जी (पूर्व नाम भाई लहिणा जी) (1539–1552) गुरूगद्दी पर पदासीन हुये और इन्होंने पंजाबी भाषा अर्थात् गुरूमुखी का प्रचार किया। गुरूमुखी का अर्थ है (गुरू के मुख से बोली गई बाणी)। इसके पश्चात् श्री गुरू अमरदास जी (1552–1574) तृतीय गुरू के रूप में प्रति स्थापित हुये। इन्होंने जन्म, मरण और विवाह संस्कार के नियमों को सरल बनाकर सत्ती प्रथा का विरोध किया, पर्दा प्रथा समाप्त की, विधवा पुर्नविवाह को प्रोत्साहित किया, अर्न्तजातीय विवाह को प्रेरित किया और नशाबंदी करवाई। इन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों के प्रमुख भक्तों की वाणी का संकलन कराया और उनको संग्रहित किया। अपनी वाणी में 'भाई रे' शब्द का सम्बोधन भी इनकी ही देन है।

चौथे गुरू श्री गुरू रामदास जी (1574–1581) ने सिक्खों के लिये दैनिक व्यवहार और भजन बंदगी के नियम निर्धारित किये जो कि सिक्ख रहित मर्यादा का प्रमुख केंद्र बना। इन्होंने हिन्दूओं की विवाह संस्कार नीति से अलग हटकर लावा (फेरे) को परिस्कृत किया। गुरबाणी में मिलावट रोकने हेतु जपुजी साहिब एवं अन्य वाणियों की प्रतिलिपियां तैयार करवाई गई और सिक्ख समाज की उन्नति व प्रचार हेतु 22 प्रचार केंद्रो (मंजियों) की स्थापना की। इन्होंने अमृतसर शहर बसाया और रामदास सरोवर (अमृतसर) की नींव रखी। यही स्वर्ण मंदिर (1534–15814) की भी नींव रखी गई और यह स्थान महान् सम्राट अकबर द्वारा भेंट स्वरूप दिया गया था।

पाँचवे गुरू श्री गुरू अर्जुन देव जी (1581–1606) के समय सिक्ख धर्म का बहुमुखी विकास हुआ। इस समय अंतराल में सिक्ख धर्म, हिन्दू धर्म एवं मुस्लिम धर्म से अलग हटकर एक स्वतंत्र तीसरा शक्तिशाली धर्म बनकर निकला। 1604 में आदि ग्रन्थ का संपादन हुआ जो श्री गुरू अर्जुन देव जी की सबसे महान् उपलब्धि के रूप में संकलित है। जिसमें एक ईश्वरवाद एवं मानवतावाद को प्राथमिकता दी गई है। गुरू जी की वाणी सुखमनी साहिब है (जो कि शांति का स्त्रोत है और सुखों की मणी है)। यह एक महान् रचना है जो कि सदियों से प्रत्येक सिक्ख के घर में पढ़ी जाती है। इनके कार्यकाल में मुगलों से संबंध तनावपूर्ण होने से, श्री गुरू अर्जुन देव जी को कई शारीरिक यातनाएँ भी दी गई। सिक्ख धर्म के लिये इनकी शहादत को शहीदी गुरूपूर्ण के रूप में मनाया जाता है।

श्री हरिगोबिंद सिंह जी को (1606–1644) सिक्खों के छठे गुरू के रूप में बाबा बुड्डा सिंह जी के कर कमलों द्वारा प्रतिस्थापित किया गया। इन्होंने श्री दरबार साहिब परिसर में हरिमंदिर साहिब के विपरीत दिशा में 1608 में अकाल तख्त की स्थापना की जो कि सिक्ख समाज में एक अद्भभुत देन है। भाई गुरदास इनके पहले जत्थेदार नियुक्त किये गये। मीरी व पीरी की अवधारण भी इन्होंने दी। यह दो तलवारों का प्रतीक है जो कि सिक्ख समाज में शारीरिक एवं अध्यात्मिक शक्तियों के विकास हेतु एक समान बल देता है। वह शांतिवाद के साथ–साथ युद्धपूर्ण कलाओं में भी पारंगत होगा। 1619 में गुरू जी के साथ पंजाब की पहाड़ियों के 52 राजाओं को मुक्त किया गया जिसे पंजाब में दीवाली वाले दिन बंदी छोड़ दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सप्तम् गुरू श्री गुरू हरिराय जी (1644–1661) रहे। यह समय सिक्ख मत के लिये शांतिमय संगठन का था। मुगलों द्वारा इन्हें जहर देकर मारा गया और उनके

पश्चात् श्री हरिकृष्ण जी को (1661–1664) आठवे गुरू के रूप में पदासीन किया।

इसके पश्चात् श्री गुरू तेग बहादुर जी को (1664–1675) को नौवे सिक्ख गुरू के रूप में गुरूगद्दी प्राप्त हुई। ईस्लाम धर्म नहीं कबूलने पर इनका शीश, धड़ से अलग कर दिया गया। इनकी शहादत मानव इतिहास में अद्वितीय व अनुपम है। श्री गुरू तेग बहादुर जी के पश्चात् 18 दिसम्बर 1661 को श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी को पदासीन किया गया। आपने जाप साहिब और अकाल उसतत की रचना की। धर्म के प्रचार व प्रसार के साथ इन्होंने सिखों को शास्त्र ज्ञान भी दिया।

29 मार्च 1669 को बैसाखी के शुभ अवसर पर गुरू गोबिन्द सिंह जी की माता द्वारा जपुजी साहिब, जाप साहिब, आनंद साहिब, चौपई साहिब और सवैये का पाठ करते हुये पंज प्यारो को अमृत्त पान कराया गया एवं खालसा पंथ की स्थापना की। इस प्रकार श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी ने राष्ट्रीयता को खालसा धर्म बना दिया और आहवान् किया कि मेरे पश्चात् कोई देहधारी गुरू की परम्परा नहीं होगी और गुरूओं की वाणी को ही श्री गुरू ग्रंथ साहिब में संकलित कर शब्दों को ही गुरू का रूप दे दिया गया।

सिक्ख समदुाय का कोटा शहर में आगमन

सिक्ख समुदाय की अधिकतम आबादी पंजाब प्रांत में है परन्तु सिक्ख समुदाय राजस्थान में कब, क्यों और कैसे आये इसका कोई विशेष साहित्य नही है और ना ही पुस्तकें। परन्तु एक अनुमान के अनुसार ब्रिटिश सामाज्य एवं रजवाड़ों के दौरान कृषि के समुन्नत करने के उद्देश्य से सिक्ख बीकानेर, गंगानगर, उदयपुर और हनुमानगढ़ में आकर बस गये। शोध के दौरान प्राप्त आंकडों से विदित होता है कि पंजाब से राजस्थान तक प्रवास करने वाले 31 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जो नौकरी के चलते यहाँ आये।

प्रवास हेतु कोटा शहर आगमन

प्रवास हेतु कोटा शहर आना	आवृत्ति	प्रतिशत
नौकरी	41	22%
व्यवसाय	50	27%
विवाह	40	22%
कृषि	16	9%
सापेक्षिक सुग्धिा	32	18%
शिक्षा	4	2%
योग	183	100%

विशेष [उत्तरदाता 1 से अधिक बिंदुओ पर मत दे सकता है अतः कुल आवृत्ति 183 हो गई है।]

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 27 प्रतिशत उत्तरदाता व्यवसाय के कारण कोटा आये एवं 22 प्रतिशत उत्तरदाता नौकरी की वजह से कोटा आये तो 22 प्रतिशत उत्तरदाता विवाह करने के पश्चात् कोटा आये। 18 प्रतिशत उत्तरदाता सापेक्षिक सुविधाओं के चलते हुये कोटा शहर आकर बसे एवं 2 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षा के चलते हुये आये। सिक्खों की अलग पहचान उनके सिक्खी स्वरूप और पहनावे के कारण है। अतः दूसरे प्रान्त में आकर उन्हें कई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा। अपनी पहचान बनाने में उन्हें समाज में संघर्ष करना पड़ा। इसीलिए कुछ बातों पर अन्य जाति के लोगों का रवैया अनुकूल था तो कहीं प्रतिकूल। निम्नलिखित बिन्दु सर्वे में विचारशील बने जिनका विवरण इस प्रकार है–

पहचान हेतु अनुकूलशीलता व प्रतिकूलता

उपासना

सिक्ख धर्म केवल एक परमात्मा (वाहेगुरू, अकालपुरख) की उपासना करता है। सिक्ख धर्म किसी और देवी, देवता, मूर्तिपूजा, पितृपूजा, जनेऊ, तिलक श्राद्ध, मृत्तकपूजा, नग्नता की पूजा और फोकट कर्म–काण्डो का बहिष्कार करता है। गुरवाणी में कहा गया है कि–

"सदा–सदा सो सेविए जो सभ महि रहे समाए।
अवर दूजा किऊ सेवीऐ, जम्मै वे मरि जाइ।।"[7]

सिक्ख धर्म में औरों की उपासना का खंडन है–

"प्रभु तिआगि लागत अन लोभा।।
दासि सलामु करत कत सोभा।।[8]

कर्म–काण्डों का खंडन

मसाणों के वास या पूजा के बारे में कहा गया है–

"रहै बेवाणी मढ़ी–मसाणी।
अंधु न जाणै फिरि पछुताणी।।"[9]

मूर्तिपूजा का खंडन

मूर्तिपूजा के खण्डन हेतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब में निम्न श्लोक अंकित है–

"देवी देवता पूजीऐ भाई किआ मागऊ किआ देहि
पाहणु नीरि परवालिये भाई जल महि बूडहि तोहि"[10]

धर्मकृत्त (धर्म की कमाई)

श्री गुरू नानक देव जी ने सिक्ख कौम को 3 सिद्धांत दिये – नाम जपो, किरत करो और बांटकर खाओ। धर्म कृत की प्रेरणा देते हुये कहा गया है कि

"घालि खाइ किछु हथहु देह।।
नानक राहु पछाणहि सेइ।।''[11]

लंगर व्यवस्था

श्री गुरू नानक देव जी ने 20 रुपये का सच्चा सौदा करके भूखे साधुओं को भोजन कराकर लंगर की व्यवस्था शुरू की। श्री गुरू अमरदास द्वारा पहले पंगत फिर संगत का सिद्धांत दिया गया। सिखो के लिये गुरू ग्रंथ साहिब का हुक्म है।

"थालि खाई किछु हथहु देइ
नानक राहु पछाणहि सेई।।"[11]

निम्न वर्ग का उत्थान

श्री गुरू नानक जी से लेकर अब तक सम्पूर्ण सिख समाज निम्न वर्ग को ऊँचा उठाने में लगा है क्योंकि जब तक समाज के निम्न वर्ग को ऊँचा नहीं उठाऐगे, तब तक बदलाव नहीं होगा। श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी में कहा गया है–

"नीचा अंदरि नीच जाति नीची हूँ अति नीच।।
नानक तिन के संगति सचि वडिया सिऊ किया रीस।।

पंच ककार

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी ने प्रत्येक सिक्ख को एक खालसा के रूप में पहचान दी एवं उन्हें

मुसलमानों से अलग करने के लिये पंच ककार केस, कंघा, कड़ा, कृपाण, और कछहरा दिया।

"Know there five K's to be emblems of Sikhism, under no condition can be exempted from them. Sword and bracelet, drawer and comb these four without hair the fifth, All other emblems are meaningless."[13]

शगुन अपशगुन का खण्डन

सिक्ख समाज में प्रत्येक दिन शुभ है क्योंकि प्रत्येक दिन प्रभु का दिया हुआ है। अतः सिक्खों में दिन, तिथि और महीने का शुभ–अशुभ विचार मनमत है।

"शगुन अपशगुन तिस को लगहि जिसु चीती ना आवै।"

सत्ती प्रथा/दहेज प्रथा का विरोध

सिक्ख समाज में स्त्री को ऊँचा मान–सम्मान प्राप्त है। सत्ती प्रथा का विरोध करते हुये गुरूबाणी में कहा गया है कि

"सतीआं एहि न आखी अनि जो मढ़िया लगि जलंनि।।

नानक सतीआ जाणी अनि जि बिरहै चोट मंरनि।।

दसवंध प्रथा

श्री गुरू नानक देव जी के समय से यह प्रथा चली आ रही है कि प्रत्येक सिक्ख अपने वेतन का दसवाँ हिस्सा धर्म कार्यो में लगाऐगा। जिसे दस गुरूओं ने परवान चढ़ाया। रहितनामों में अनेक प्रमाण मिलते है–

जो अपनी किछ करहु कमाई
गुरू हित दिऊ दसवंध बनाई

इसी तरह– दसवंध गुरू न देवई झूठ बोल जो खाहि

कहै गोविंद सिंह लाल जी तिसका किछु न बसाहि।।[10] (रहितनामा)

मीरी/पीरी (भक्ति और शक्ति का प्रतीक)

सिक्ख समाज में मीरी/पीरी का अर्थ पवित्र एवं अध्यात्मिक कार्यों से जुड़ते हुये अपनी शक्ति और साहस का प्रदर्शन करके समाज का कल्याण करना है। गरीबों की सेवा करना सिक्ख धर्म की पहचान है और साथ ही भारतीय सेना में अपनी शक्ति, साहस, शौर्य का परिचय देना भी सिक्ख धर्म की पहचान है। इसके अतिरिक्त सिक्ख समाज जाति–पाति और लिंग भेद का विरोध करता है।

अस्तित्व बनाये रखने हेतु चुनौतियाँ

वर्तमान समय में प्रत्येक समाज एक तीव्र व गहन बदलाव के परिदृश्य पर खड़ा है जिससे सिख समाज भी अछूता नहीं है। यह परिवर्तन ग्लोबलाजेशन से संबंधित है। यह ऐसी प्रक्रिया है जिसमें लोग अपनी आवश्यकताओं के लिये एक–दूसरे पर निर्भर होते है। जिससे जीवन स्तर में वृद्धि होने के साथ–साथ जीवन से संबंधित मूलभूत संस्थाओ में भी परिवर्तन होता है। (गिडिंग्स 1999)

सिक्ख समाज में उच्च शिक्षा, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और लैंगिक समानता पर बल दिये जाने से ग्रामीण परिवेश में पोषित सिक्ख स्त्रियाँ व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्वतंत्रता की हकदार बनी है। जिससे वह प्रेमी के रूप में अपने जीवन साथी का चुनाव अभिव्यक्ति, सामाजिक स्वतंत्रता और वस्त्रों के चयन की हकदार बनी है। बदलते हुये सामाजिक मूल्य प्रतिमानों के अनुरूप जीवनसाथी के चयन में इन्टरनेट, सोशल मीडिया और शिक्षा ने अहम् भूमिका अदा की है। प्राचीन समय में विवाह अपनी जाति तक ही सीमित थे परन्तु वर्तमान संदर्भ में विवाह शैक्षिक, मानसिक सामंजस्यता एवं आर्थिक पक्ष को ध्यान में रखकर किये जाने लगे है। अखबारों में वैवाहिक विज्ञापनों के माध्यम से वर्णित आयु, प्रस्थिति, शिक्षा, व्यवसाय और परिवारिक प्रस्थिति भी वैवाहिक संस्थाओं के निर्णय लेने में महत्वपूर्ण परिवर्तन निभा रही है।

सिक्ख समाज में उच्च शिक्षित स्त्रियाँ परम्परागत विवाह की बजाय डेटिंग प्रक्रिया के द्वारा जीवन साथी को समझती है। वर्तमान में विलंब विवाह करती है क्योंकि स्त्रियों कार्यशील है। उच्च शिक्षा, उच्च आर्थिक स्थिति से संयुक्त परिवारों का ह्रास, व्यक्तिगत स्वतंत्रता का बोलबाला एवं मातेदारी प्रथा शिथिल हुई है। वर्तमान समय में सिख समाज पंच कंकार के परिपेक्ष्य में केशों के व्यबधि करने लगा है एवं विदेशों में अधिकतर सिक्ख दस्तार, किसी विशेष सामाजिक प्रयोजन पर और विवाह आदि पर ही बांधने लगे है। सिखसमाज में विवाह हेतु स्त्री, पुरुष की सहमति लेना, आपसी रजामंदी से तलाक होना और विधवा पुर्नविवाह भी होने लगे है। अर्न्तजातीय विवाह में उच्च शिक्षा, मानसिक सामंजस्यता ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। यही कारण है कि ना केवल भारत बल्कि विदेशों में भी अन्य जातियों के लोगों ने सिख समुदाय में विवाह संबंध स्थापित किये है। सिक्ख समुदाय परम्परागत व्यवसायों से हटकर अच्छी प्रतिष्ठित नौकरियों में लगे है।

नवीन पीढ़ी प्रतिदिन गुरूद्वारे जाने की बजाय तिथि त्यौहारों पर ही गुरूद्वारे जाती है एवं पंच वाणियों का पाठ भी नहीं करती जिससे सिक्ख इतिहास एवं संस्कृति से वंचित हुये हैं। शिक्षा ने विवाह के आयामों में बदलाव किया है, वर्तमान समय में अरैंज विवाह में योग्य वर वधू की कमी महसूस हो रही है। इस कारण वह वैवाहिक वेबसाइट पर जाते है जहाँ विवाह के नाम पर स्त्रियों का शोषण होना, धोखाधड़ी होना आम बात है जिससे युवाओं में वैवाहिक संस्था जैसे पवित्र बंधन में विश्वास डगमगाया गया है। अतः वर्तमान समाज में सिक्ख समाज के समक्ष भी चुनौतियां है परन्तु वह गुरूओं की वाणी पर चलकर अपने अस्तित्व को बनाने रखने में प्रयासशील है और चड्दी कला में है।

निष्कर्ष

सिख धर्म संसार का एक नवीन, स्वच्छ, परिष्कृत एवं परिपक्व धर्म है जिसका उदय पन्द्रहवीं सदी के उत्तरार्ध में हुआ। प्रस्तुत शोध पत्र में सिक्ख धर्म की उत्पत्ति, भारतवर्ष में इसके प्रसार प्रचार एवं सिक्ख धर्म के मूलभूत सिद्धांतों की व्याख्या की गई है। सिक्ख धर्म में सामाजिक समानता, परस्पर सहयोग, सामाजिक–मर्यादा, स्त्री सम्मान, सामुदायिक भावना, नेक आचरण एवं नीतिगत मर्यादा, संघर्ष, वीरता, जागरूकता, प्रेम भावना और धर्म–कृत जैसे अनुकूलनशील गुणों की व्याख्या करके

सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण की बात कही गई है। सिक्ख समाज नवीन चुनौतियों के संदर्भ में अपने धर्म की प्रबलता को बनाये रखे हुये है।

अंत टिप्पणी

1. *Dutt, A. K and Devgun, S. A (1977), 'Diffusion of Sikhism and recent migration patterns of Sikhs in India', GeoJournal, pp 81-90.*
2. *Giddens, A (1999), Globalization, Directors lecture retrieved from http://www/se.ac.uk/Giddens/reith-99/default.htm.*
3. *Gupta, M. G (1990), Nanak and Saints, M. G. Publisher Agra.*
4. *Macauliffe, A. M (1990), The Sikh Religion, Low Price Publication Delhi.*
5. *Mohan, V (2015), Census 2011: Percentage of Sikhs drops in Punjab; Migration to Blame, https://timesofindia.indiatimes.com/city/chandigarh/Census-2011-age-of-Sikhs-drops-in-Punjab-migration-to-blame/articleshow/48689317.cms*
6. *Sabar, J. S (2009), Sikh Religious Study, Part 1, Shri Amritsar, Directorate of Sikh Studies, Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee.*
7. *Shri Guru Granth Sahib, Sikh Hymns, place of publication not identified, Gujri Mehla 3, pp 509.*
8. *Shri Guru Granth Sahib, Sikh Hymns, place of publication not identified, Gauri Mehla 5, pp 195.*
9. *Shri Guru Granth Sahib, Sikh Hymns, place of publication not identified, Var Asa Slok,Mehla 1, pp 749.*
10. *Shri Guru Granth Sahib, Sikh Hymns, place of publication not identified, Sorat Mehla 1, pp 637.*
11. *Shri Guru Granth Sahib, Sikh Hymns, place of publication not identified, Salok Mehla 1, pp1245.*
12. *Singh, H (1983), The Heritage of Sikhs, Manohar Publisher Patiala.*
13. *Singh, J. J, Sarab Loh Granth (M. S: Hazur Sahib), year of publication not identified, Sangrur: Dasham Granth.*

Book Publication

SRF has ISBN (International Standard Book Number) to publish Books also. Interested writers/authors can contact us to publish their educational material in Book Form with ISBN. **SRF** is also working to publish reference Books on approx 100 different topics and our target is to publish 50 Reference Books per year with different titles.

Following books has been published through **SRF** till date :

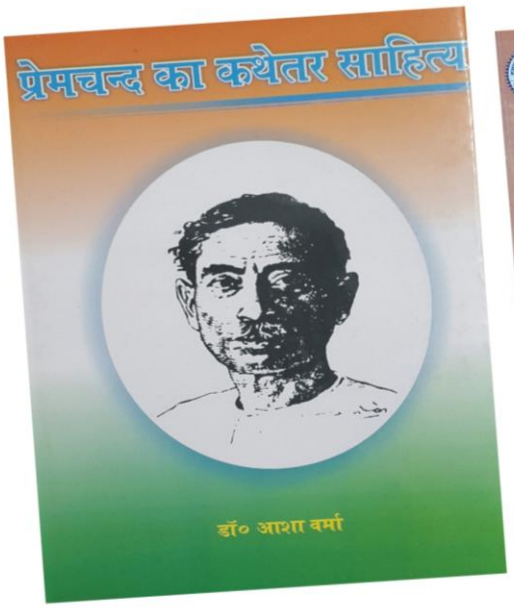

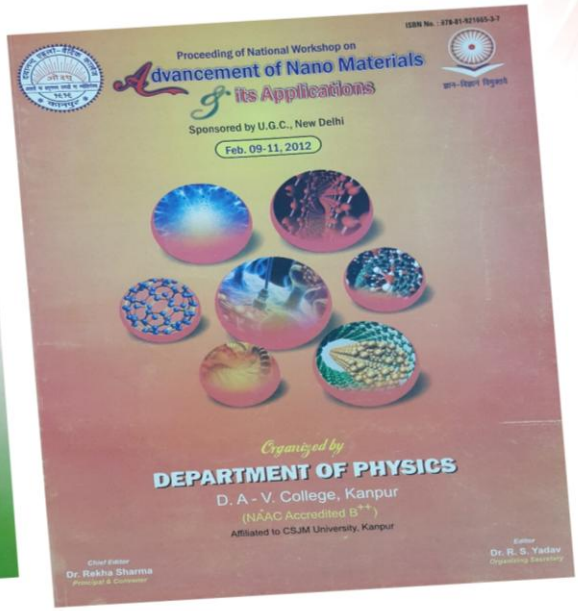

Contact for Book Publication with ISBN....

Edited/ Reference Book

Convert your THESIS into Book

Publish your own Book